ISSN2393-8838

Date of Publishing 19th August Vol. No.30 Issue No.8

AUGUST 2019

Rs.10/-

मासिक

इसलाहे समाज

समाज सुधारक पत्रिका

पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह के नज़दीक सबसे अच्छे वह लोग हैं जो लोगों को सबसे ज़्यादा लाभ पहुंचाने वाले हैं। (तबरानी)

1

जीवन का मक़सद

नौशाद अहमद

सुख चैन दुनिया की बड़ी नेमतों में से एक है, इसकी इच्छा हर इन्सान रखता है, अमीर हो गरीब हो, किसान हो, ताजिर हो, डाक्टर हो, टीचर हो, सब की चाहत यही होती है कि उसकी जिन्दगी सुख चैन से गुज़रे और समाज में हर तरफ अम्न व शान्ति प्यार मुहब्बत, उदारता, सौहार्द, एकता और सामाजिक सदभावना का बोल बाला हो, अम्न व शान्ति के बगैर न दुनिया की बड़ी से बड़ी दौलत अच्छी लगती है और न बड़ी से बड़ी खुशी महसूस होती है। हर्षोउल्लास का मौक़ा होते हुए भी इन्सान अन्दर से कहीं न कहीं इस बड़ी नेमत की कमी को महसूस करता है और उसको यह आभास होता है कि दौलत के साथ अगर अम्न व शान्ति और सुख चैन का भी वातावरण मिल जाए तो फिर इससे बड़ी नेमत क्या हो सकती है।

अल्लाह ने दुनिया के हर जानदार के जीवन की एक मुददत तय कर दी है इसी तय शुदा मुददत में वह अपनी अमानत वापस ले लेता है। जीवन अल्लाह की अमानत है, इस अमानत को देकर अल्लाह अपने बन्दों को आज़माता है कि वह अपने जीवन का उपयोग किस ढंग और किस काम में करता है। लापरवाही में कुछ लोग अपने जीवन को यूं ही गुजार देते हैं, उनको यह एहसास ही नहीं रहता कि उसके जीवन का एक एक क्षण कितना बहुमूल्य और कीमती है। यही इन्सान की परीक्षा की घड़ी है कि बन्दा अपने समय को कहां खपाता है अच्छे कामों में या बुरे कामों में, इन्सान को अक़्ल दी गई है कि वह इस का सहीह इस्तेमाल करके एक कामयाब और अच्छा इन्सान बन जाए लेकिन यह कितने दुर्भाग्य की बात है कि वह अपनी ज़िन्दगी को यूं ही गुज़ार देता है और एक वक़्त ऐसा भी आता है कि आत्मा उसके शरीर से निकल चुकी होती है। अर्थात वह इस दुनिया से रूखसत हो जाता है यहां पर मरने वाले की दौलत रह जाती है साथ में कवेल उसका कर्म जाता है।

दुनिया का कोई जानदार चाहे जितनी शक्ति रखता हो लेकिन मौत के सामने इंसान समेत हर जानदार बेबस है, यह इन्सान की जिन्दगी की एक ऐसी कड़ी है जो इन्सान को यह संकेत देती है कि इस दुनिया से जाने के बाद उसका कर्म ही काम आए गा। इस सच्चाई को दुनिया का हर इन्सान जानता है लेकिन स्वार्थ और घमंड में वह ऐसी हरकतें करता है जो मानव समाज के लिये परेशानी और उलझन का कारण बन जाता है, जब कि धर्म हमें यह सिखाता है कि हम दूसरों के लिये लाभकारी बनें, देश समाज के लिये ऐसा काम करें जो हमें एक अच्छा इन्सान कहलाने का पत्र बनाता हो, और हर उस कर्म से परहेज़ करें जो हमें नरक और असफलता की तरफ ले जाता है।

आज संसार में जहां कहीं भी बेचैनी, आपसी नफरत की भावना पायी जा रही है तो इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि आज का इन्सान स्वार्थ में पड़ कर अपने जीवन के मक़सद को भूल गया है और वह ऐसे नकारात्मक कामों की तरफ बढ़ रहा है जो उसके लिये सरासर घातक है। हर इन्सान को अपने जीवन को सकारात्मक कामों में लगाना चाहिए और कोई ऐसा काम नहीं करना चाहिए जो पूरे समाज के लिये उलझन और परेशानी खड़े करता हो और हर इंसान को असल सच्चाई जानने की कोशिश करनी चाहिए। असल हकीकत न जानने की वजह से कुछ स्वार्थी किस्म के लोग गलत दिशा की तरफ ले जाने में कामयाब हो जाते हैं हमें किसी के बहकावे में न आकर असल हकीकत जानने की कोशिश करनी चाहिए ताकि हम पूरे समाज के लिये लाभकारी और हितकारी बन सकें।

मासिक
इसलाहे समाज
अगस्त 2019 वर्ष 30 अंक 8
ज़िलहिज्जा 1440 हिजरी

संरक्षक
असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

संपादक
एह़सानुल् ह़क़्क़्

❑ वार्षिक राशि	100 रुपये
❑ प्रति कापी	10 रुपये
❑ टोटल पेज	28

सम्पर्क
मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)
4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद
दिल्ली-110006
फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613

RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से भारत आफसेट 2035 क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: एह़सानुल् ह़क़्क़्

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1. जीवन का मक़सद 2
2. ज़िम्मेदार कौन? 4
3. हमें एक दूसरे के लिये लाभकारी होना चाहिए 9
4. उर्दू भाषा की अहमियत 10
5. आइशा रजिअल्लाहो अन्हा का बयान 12
6. मां बाप और स्टूडेन्ट्स की ज़िम्मेदारियाँ 13
7. दीने उख़ुव्वत व मुसावात 14
8. नई नस्ल की इसलाह और अध्यापकों... 16
9. तंबाकू और हाई बलड प्रेशर 19
10. प्रेस रिलीज़ (मुहम्मद यूनुस अंसारी) 20
11. इस्लाम और मज़दूर 21
12. पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया 22
13. दानवीरता 25
14. पानी की बर्बादी का असल कारण... 26
15. विज्ञापन 28

ईमेल:-
Jaridahtarjuman@gmail.com
Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com

अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है
वेब साइट:- www.ahlehadees.org

ज़िम्मेदार कौन?

मौलान असगर अली इमाम महदी

जिन्दगी के कारवाँ (यात्रीदल) में शासक भी हैं और प्रजा भी और पब्लिक भी, मालदार भी, कमज़ोर भी है और ताकतवर भी, हिन्दू भी हैं और मुसलमान भी, सिख भी हैं और ईसाई भी, दोस्त भी हैं भाई भी, अपने भी हैं और पराए भी, यानी जो भी जीवित हैं जीवन की राहों में हमारा हम सफर (सह यात्री) हैं। जो भी समाज में है वह समाज का महत्वपूर्ण तत्व और भाग है जो भी देश में है अपना हमवतन और साथी है और देश समाज और वतन का अभिन्न अंग है जिसे माने बिना चारा नहीं। बल्कि संसार में जहां कहीं भी हैं वह इस ज़िन्दगी के कारवां का एक महत्वपूर्ण भाग है और इसमें सब की हाजत व ज़रूरत, मआश व रोज़गार, दुख दर्द, नर्म गर्म, उतार चढ़ाव, ऊँच नीच, खुशी गम, हैसियत के अनुसार जिममेदारी और मक़ाम व मर्तबा बराबर है। इस काफिले का एक व्यक्ति किसी डाकू के हत्थे चढ़ रहा हो तो क्या ट्रेफिक व मोबाइल पुलिस ही को आरोपित ठेहरा कर खामूश रहना सहीह होगा या ताकत के अनुसार सभी इस के बचाव और सुरक्षा के ज़िम्मेदार होंगे? इसके अलावा कब, कौन और किस हाल में कितना ज़िम्मेदार है?

माना कि मोब लिंचिंग जैसी हिंसा के मामलात में क़ानून और सत्ता की हैसियत से पहली और आखिरी जिम्मेदारी सरकार की बनती है कि वह इसकी रोक थाम के लिये हर संभव संसाधन को इस्तेमाल करते हुए इस पर नियंत्रण पाने का प्रयास करे। अगर इस तरह की घिनावनी और निन्दित हरकत किसी नागरिक से हो जाती है चाहे गलतफहमी की बुनियाद पर या उत्तेजना की बुनियाद पर, चाहे इसे कोई व्यक्ति अंजाम दे या किसी भीड़ ने अंधा धुंध इसका अपराध किया हो तो सरकार और कानून इस का फैसला करे और अपराधियों को घटना के अनुसार और नरम गर्म सज़ा के द्वारा पीड़ितों के दर्द का उपचार करे ताकि इन्साफ के तक़ाज़े पूरे हों। कानून को हाथ में लेने और अराजकता फैलाने वाले जज़बात को हौसला न मिले और अन्य नागरिकों को इस तरह की नाआकिबत अन्देशी (अपरिणाम दर्शिता) करने और मुजरिमाना एवं उत्तेजना पूर्ण कर्म करने से रोके और इस तरह के इक़दाम से बाज़ रखने का सामान भी बने।

मोबलिंचिंग जैसे बेलगाम और सरफिरों के जुल्म व ज्यादती पर सरकार की जिम्मेदारियां और चिंताएं वाजिब होने के बावजूद विभिन्न धर्मों खास तौर से हमारे हिन्दू धर्म गुरूओं, महा पंडितों, साधूसंतों और पुरोहितों जिनका एक धार्मिक स्थान के अलावा समाजी प्रभाव, रोबदाव और मक़ाम व मर्तबा भी लोगों के दिलों में है, की नैतिक व धार्मिक और इन्सानी एवं देशीय जिम्मेदारी बनती है कि वह ऐसे अवसर पर प्रभावी बयानात व एलानात, अपील और उपदेश के ज़रिये इसकी खराबी

को उजागर करें, दूसरी सूरत में इन्हें स्पष्ट रूप से इसकी निन्दा और खण्डन भी करना चाहिए बल्कि अगर वह मुसलमान और अन्य अल्पसंख्यकों के धर्म गुरूओं, ओलमा और ईसाई व यहूदी धर्म गुरूओं की अपेक्षा ज़्यादा बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते तो इस तरह के तत्व का एक तरह हतोत्साहन भी होता और उनकी अहिंसा की शिक्षा की वजह से हिंसा से रूक भी जाते और दीन धर्म का अगर थोड़ा भी उनके अन्दर एहसास होता तो वह अवश्य धर्म गुरूओं की बातों पर कान धरते और भविश्य में ऐसा न करने का संकल्प करते कि उनके धर्मगुरू भी स्पष्टरूप से हिंसा को जुल्म क़रार दे रहे हैं इसलिये ऐसा नहीं करना चाहिए।

लेकिन मेरे सीमित ज्ञान की हद तक अधिकता से धर्म स्थलों मंदिर, मठ और धर्मशालाएं पाई जाती हैं और इनमें धर्म गुरूओं की मौजूदगी है, इस हिसाब से मोब लिंचिंग के खिलाफ कोई प्रभावी आवाज़ सुनने को नहीं मिलती। मामूली तादाद में शंकराचार्या जी अगर कहीं और कभी इसकी निंदा करते नज़र भी आते हैं तो आम तौर पर वह मुस्लिम मंचों और स्टेजों के हवाले से ही और इन्ही के बीच लेकिन अफसोस यह है कि इसे भी निष्प्रभावी (बेअसर) करने के लिये विभिन्न संसाधान और तरीके आज़माए जाते हैं। कोई कहता है कि यह धर्म गुरू राजीनीतिक हो गये हैं, अमुक पार्टी के समर्थन में हिन्दू होकर भी ऐसा बयान दे रहे हैं। कोई कहता है कि ऐसा भाषण केवल मुसलमानों और अल्पसंख्यकों को खुश करने के लिये दिया जा रहा है, कोई आरोप धरता है कि ऐसे धर्म गुरूओं और शंकराचार्या लोगों की कोई हैसियत नहीं है। यानी इसे नाकाम करने के ढेरों जतन और प्रोपैगन्डे किए जाते हैं फिर दूसरे धर्म गुरू इसकी हिम्मत नहीं कर पाते कि इन पर भी कोई आरोप न धर दिया जाए। मैं नहीं कहता कि हमारे हिन्दू, सिख, ईसाई भाई जो धार्मिक गुरू हैं वह अहिंसा की बात सिर्फ अपने लोगों में ही नहीं करते होंगे बलिक वह जन सभाओं में इन्सानों और अन्य जीवों, हैवानों यहां तक कि निर्जीव, वनस्पतियों और अल्लाह की सृष्टि पर अत्याचार की निन्दा और खराबी भी बयान करते होंगे क्योंकि हिन्दुस्तान में आज भी अहिंसा पर विश्वास रखने वाले और मानवता व इंसानियत की क़द्र व कीमत को जानने और मानने वालों की तादाद ज़्यादा है। और अधिकतर भारतीय अहिंसा पर विश्वास करते हैं और अल्लाह की सृष्टि खास कर इन्सान के क़त्ल व हत्या को महा पाप समझते हैं और इसकी शिक्षा अपने अनुयाइयों और श्रद्धालुओं को सुबह शाम देते हैं वर्ना हिंसा को स्वयं उनके माहौल व समाज में रोकना असंभव और कठिन हो जाता हालांकि उनके यहां मानवता की बड़ी इज्ज़त और सम्मान है और थोड़े अन्तर के साथ हर धर्म में यह बात मौजूद है।

लेकिन इस्लाम जिस का अर्थ ही अम्न व सुरक्षा और मुहब्बत व शान्ति है, ने विभिन्न शैली में अम्न व शान्ति और इन्सानी भाई चारा की अहमियत व ज़रूरत को उजागर किया है और समाज के हर हर व्यक्ति को अम्न की स्थापना और साधारण व असाधारण के जान व माल की सुरक्षा का जिम्मेदार बनाया है और हिंसा चाहे व्यक्तगत रूप से हो या सामूहिक, की निन्द और

हतोत्साहन (हौसला शिकनी) की है। अगर्चे लोगों के जान व माल और इज्ज़त व आबरू की हिफाज़त का जिम्मेदार समाज के हर वर्ग और व्यक्ति को ठेहराया गया है लेकिन सबसे ज़यादा जिम्मेदारी और बुनियादी जिम्मेदारी मां बाप, शासक, फैमली और परिवार के प्रमुखों की बताई गई है। बुखारी की एक रिवायत में इब्ने उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते है कि मैंने पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुना कि तुम में का हर शख्स ज़िम्मेदार है और तुममें का हर शख्स अपनी जिम्मेदारियों के बारे में पूछा जाएगा। इमाम ज़िम्मेदार है और वह अपनी जिम्मेदारियों के बारे में पूछा जाएगा, आदमी अपने घर में जिम्मेदार है और अपनी ज़िम्मेदारी के बारे में पूछा जाएगा। औरत अपने पति के घर की ज़िम्मेदार है और अपनी जिम्मेदारियों के बारे में पूछी जाएगी और सेवक अपने मालिक के माल का जिम्मेदार है और वह अपनी जिम्मेदारियों के बारे में पूछा जायेगा।

मां बाप से कहा गया है कि बच्चों को अच्छी ट्रेनिंग दें ताकि अच्छे नागरिक बनें, अम्न व भाईचारा और मेल जोल के साथ रहें, बुरे लोगों और लफंगों की संगत से दूर रहें, हुल्लड़ बाज़ी न करें, हर धर्म के बुजुर्गों का सम्मान करें और सबसे बड़ी बात यह है कि वह अल्लाह से डरें। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः कोई भी बाप अपने बेटे को अच्छे शिष्टाचार से बेहतर चीज़ नहीं देता।

इसी तरह इमामों, समाज सुध ारकों और प्रचारकों को जिम्मेदार बनाया गया है कि नई पीढ़ी की सही ट्रेनिंग करें और उनको बेहतरीन नागरिक बनाएं उन पर यह जिम्मेदारी अलग से डाली गई है। इमाम, प्रचारक, अध्यापक ओलमा सब खास तौर से इस आदेश में शामिल हैं। जमीअतों, जमाअतों, सूसाइटियों और विभिन्न प्रकार की संस्थाओं और शख्सियतों की यह महत्व पूर्ण जिम्मेदारी है। आतंकवाद व हिंसा के ख़िलाफ सब ही अपने अपने तौर पर अभियान शुरू करें। क्योंकि यह किसी व्यक्ति व समाज के लिये ख़ास नहीं है बल्कि हर ध र्म की बुनियादी शिक्षाओं में शामिल है।

सामूहिक हिंसा आदि जैसे हो रहे हादिसात को रोकने की जिम्मेदारी कानून को हाथ में लिये बग़ैर अपनी सीमा में रहते हुए सिविल सूसाइटी के हर व्यक्ति की है। साधारण आदेश है। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया तुम में से जो कोई समाज में मुनकर (अप्रिय) काम होता देखे तो इसको हाथ से रोके, अगर हाथ से रोकने की सकत न हो तो जुबान से इसको रोके और अगर जुबान से भी रोकने का सामर्थ्य न हो तोअपने दिल में इस अप्रिय काम को बुरा जाने और यह ईमान का सबसे कमज़ोर दर्जा है।

इस्लाम केवल मुसलमानों के जान व माल और इज्ज़त व आबरू का रक्षक नहीं है बल्कि वह बिना ध र्म के अन्तर के पूरी मानव समुदाय के जान व माल का रक्षक और पासबान है। वह एक अच्छे मुसलमान का परिचय इन शब्दों में करता है। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया अच्छा मुसलमान वह है जिसकी जुबान और हाथ से लोग सुरक्षित रहें और इससे किसी को किसी तरह नुकसान न पहुंचे

और अच्छा मोमिन वह है जिससे लोगों को अपने जान व माल का खतरा न हो। (मुसनद अहमद)

बल्कि आम इन्सानों के जान व माल की सुरक्षा और उनको लाभ पहुँचाने को अल्लाह के निकटता का माध्यम बताया। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह के नज़दीक सबसे अच्छे वह लोग हैं जो लोगों को सबसे ज़्यादा लाभ पहुंचाने वाले हैं। (तबरानी)

अल्लाह की सृष्टि से दया व करूणा का मामला करना अल्लाह की रहमत व कृपादृष्टि का इन्सान पात्र बन जाता है। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः दया करने वाले पर अल्लाह तआला दया करता है इसलिये धरती वालों पर दया करो आकाशा वाला तुम पर दया करेगा। (तिर्मिजी)

चूंकि मोबलिंचिंग के कारणों में से धार्मिक व गरोही पक्षपात सबसे बड़ा कारण है इसलिये इस्लाम ध ार्मिक पक्षपात व हिंसा के उन्मूलन के साथ साथ मसलकी पक्षपात और हिंसा का भी हतोत्साहन करता है और मुसलमानों से विशेष रूप से इस तरह संबोधित करता है कि मुसलमान वह है जिसकी जुबान और हाथ से मुसलमान सुरक्षित रहें। (बुखारी, मुस्लिम)

मोबलिंचिगं ऐसी बुराई और अपराध है कि किसी भी तरह इसका हिस्सा बनना भी दीन व ईमान के लिये घातक है। इन्सान की आक़िबत ख़राब हो जाती है क्यामत के दिन मुफलिसों में से माना जायेगा। अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो बयान करते हैं कि पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि तुम जानते हो कि मुफिलस कौन है? सहाबा किराम ने जवाब दिया कि हम में मुफलिस वह है जिसके पास दिरहम और माल व दौलत न हो। आपने फरमाया कि मेरी उम्मत का मुफलिस आदमी वह है जो क़्यामत के दिन नमाज़, रोज़ा, ज़कात लेकर हाज़िर होगा इस हाल में कि उसने किसी को गाली दी होगी, किसी को तोहमत लगाई होगी, किसी का माल हड़प किया होगा, किसी का खून बहाया होगा, किसी को मारा पीटा होगा तो इस (पाप) के बदले उसकी नेकियां ले ली जाएं गी और जब उसकी नेकियां लेते लेते ख़तम हो जाएं गी तो प्रताड़ितों के पाप उसके ऊपर लाद दिए जायेंगे और इस तरह वह नरक में फेंक दिया जाएगा। (पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उपदेशों, कथनों, कर्मों पर आध ारित किताब सहीह मुस्लिम)

इस प्रकार सबसे पहली और आख़िरी जिम्मेदारी खानदान, समाज और सूसाइटी की बनती है। इस सबके बावजूद कोई सरफिरा उठ खड़ा होता है और समाज के लिये समस्या बन जाता है चाहे मोबलिंचिंग करें, जन संसाधन या संपत्ति को नुकसान पहुंचाएँ और आतंकी हरकतों को अंजाम दें इत्यादि। इन हालात में ज़ाहिर है कि हर जगह पुलिस मौजूद नहीं होती ऐसे हालात में धर्म गुरूओं और सूसाइटी के जिम्मेदारों और जनता की जिम्मेदारी बनती है कि वह इसे रोकें और प्रशासन के सहयोगी बनें।

अफसोस की बात और बड़ा जुल्म और दुर्भाग्य की बात है कि किसी को हिंसा का निशाना (लक्ष्य़) बनाया जाता है और लोग खड़े तमाशा देखते रहते हैं। किसी मुस्लिम मोहल्ला में किसी गैर मुस्मिल भाई पर या किसी गैर मुस्लिम मोहल्ला

में किसी मुसलमान के साथ अत्याचार हो रहा हो और पूरा का पूरा मोहल्ला तमाशाई (दर्शक) बना रहे यह बहुत खेदजनक और अत्यंत लज्जा और जिम्मेदारी के एहसास न होने की बात है। केवल वीडियो बना लेना और पुलिस को खबर कर देना ही काफी नहीं है बल्कि सूसाइटी के हर व्यकित पर बुद्धिमत्ता और अकलमन्दी और हिम्मत से इस अत्याचार से रोकने की कोशिश करना फर्ज़ है और इन अपराधों की रोक थाम करनी चाहिए।

हिंसा और आतंकवाद चाहे व्यक्तिगत हो या सामूहिक इसलाम की निगाह में और सभ्य समाज की नज़र में खण्डनीय एवं निंदनीय है और यह ऐसा अपराध है जिसको बहराल किसी तरह वैधता का जामा नहीं पहनाया जा सकता। इस्लाम की इसी इसपिरिट और सलफी विचारधार की इनही शिक्षाओं का असर है कि आतंकवाद चाहे जिस रूप में दुनिया में हुआ हो हमने तुरन्त भरपूर सामूहिक एवं व्यक्तिगत निन्दा और खण्डन किया, सामूहिक फतवे जारी किये, बड़ी बड़ी कांफ्रेन्सें, राष्ट्री अन्तर्राष्टीय स्थानीय स्तर पर आयोजित किए सेमीनारों का एक सिलसिला शुरू कर दिया और आज भी किसी तरह की हिंसा, अत्याचार, और अतांकवाद रोकने के लिये चाहे कोई भी कमेटी हो हम इसके छोटे या बड़े मिंबर की हैसियत से हर वक़्त तैयार हैं। जिम्मेदारी का यह एहसास हर व्यक्ति के अन्दर पैदा होना चाहिए।

❑ ❑ ❑

मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द की पत्रिकाओं का सदस्य बनाने के लिये सहयोग करें।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द अपने अपने लक्ष्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर है। जमीअत के तीन आर्गन निरंतर प्रकाशित हो रहे हैं।

जरीदा तर्जुमान पाक्षिक (उर्दू) 150 वार्षिक

इस्लाहे समाज मासिक (हिन्दी) 100 वार्षिक

दी सिम्पल ट्रुथ मासिक (अंग्रेज़ी) 100 वार्षिक

खुद भी पढ़ें और दूसरों को खरीदार बनवायें। यह एक मिशन है जिसको कामयाब बनाना हम सब की संयुक्त ज़िम्मेदारी है।

हमें एक दूसरे के लिये लाभकारी होना चाहिए

नौशाद अहमद

इस्लाम ने अम्न व शान्ति के बारे में पूरी मानवता को ऐसी शिक्षा और निर्देश दिया है जिस पर चल कर पूरे मानव जीवन को सफल और सुखद बनाया जा सकता है। धर्म इन्सान को सफलता की तरफ ले जाता है, अच्छा बनने और दूसरों का भला करने की प्ररेणा देता है, इस बात पर सभी लोग एकमत हैं कि भला काम करने से मन को सुख और राहत मिलती है और बुरा काम करने से हर इन्सान का मन दुखी हो जाता है बुरा काम करने वाले के पास सुख नहीं होता है उसका मन हमेशा विचलित रहता है। यही वजह है कि हर ज़माने में ऐसे लोग मौजूद रहे हैं जो इन्सान के जीवन और समाज को सुखमय बनाने का प्रयास करते रहे हैं, आज दुनिया में जितना भी सुख शान्ति, अम्न व चैन है तो यह इन्हीं भले मानस लोगों के प्रयासों प्रयत्नों का फल है हम सभी को इसका एतराफ करना चाहिए और जिन हस्तियों ने भी मानवता के सुधार के लिये कोशिशें की हैं उनकी प्रशंसा करनी चाहिए और यइ आभार व्यक्त करते रहना चाहिए कि उनकी वजह से दुनिया में सुख शान्ति पायी जा रही है यह एक ऐसी सच्चाई है जिससे इन्कार संभव नहीं हैं

आरोप प्रत्यारोप किसी भी मसले और समस्या का समाधान नहीं है, आरोप प्रत्यारोप और सच्चाई से मुंह मोड़ना एक ऐसी दलदल है जिससे निकल पाना उसी वक़्त संभव हो सकता है जब हम एक दूसरे की खूबियों को खुले मन से स्वीकार करें। आप देखते और सुनते होंगे कि दुनिया के किसी कोने में कोई असुगम घटना घटती है तो असमाजिक तत्व इस असुगम घटना को एक ख़ास वर्ग की तरफ मनसूब करने या ऐसी असमाजिक गतिविधिा के लिये एक खास कम्युनिटी को जिम्मेदार क़रार देने लगते हैं, जबकि किसी भी असमाजिक घटना के लिये असमाजिक व्यक्ति ही जिम्मेदार होता है न कि पूरा समुदाय या कमयूनिटी।

लगभग हर वर्ग में अच्छे बुरे लोग पाये जाते हैं न्याय की बात तो यह है कि इस सच्चाई को स्वीकार किया जाए लेकिन होता इसके विपरीत है। मानवीयता या मानवता और इन्सान का ज़मीर यह कहता है कि बिना छानबीन किसी नाखुशगवार घटना के लिये किसी कम्यूनिटी को जिम्मेदार नहीं ठेहराना चाहिए।

विश्व स्तर पर हालात जो कुछ भी हों, इस संसार में रहना वाला इन्सान की हैसियत से हर प्राणी सम्माननीय है, उसकी जान सम्माननीय है उसकी स्मिता सम्माननीय है, इसलिये अकारण किसी को मारना और कत्ल करना इन्सानी कर्म नहीं हो सकता, हर धर्म और देश का कानून यही कहता है कि हर इन्सान अच्छे व्यवहार का पात्र है, लेकिन यह बड़े खे़द की बात है कि कुछ असमाजिक लोग क़ानून को अपने हाथ में लेकर कानून व्यवस्था को पटरी से उतारने का प्रयास करते हैं यह बहुत चिंता का विषय है, इस संबन्ध में सबको बड़ी गंभीरता से सोचना चाहिए इसी में पूरी मानवता की भलाई है। और यही हर इन्सान के जीवन का उददेश्य होना चाहिए कि वह इस दुनिया में सफल होने के लिये आया है दूसरों को लाभ पहुंचाने के लिये आया है इसलिये हम तमाम इन्सानों को एकदूसरे के लिये लाभाकारी होना चाहिए और कोई ऐसी हरकत नहीं करनी चाहिए जो हमें धर्म और

कानून की निगाह में नीचा कर दे।

उर्दू भाषा की अहमियत

किसी भी जुबान या भाषा की अपनी अहमियत होती है, अगर गैर जानिबदार होकर गहराई से इस बात की समीक्षा की जाए तो कोई भी इस सच्चाई से इन्कार नहीं कर सकता है कि भाषा और जुबान ही एक दूसरे को समझने और एक दूसरे से करीब करने का सबसे बड़ी माध्यम है लेकिन अफसोस है कि कुछ अपनी लापरवाही और अन्य लोगों के पक्षपात से उर्दू जुबान का जिस प्रकार से पतन होता जा रहा है वह न केवल अफसोसनाक बल्कि चिंतनीय है।

उर्दू भाषा के बारे में एक गलत फहमी यह पैदा की गई है कि अब उर्दू जुबान पढ़ने का कोई भायदा नहीं है, इसका कोई भविष्य नहीं है, इस भाषा से रोज़गार के अवसर नहीं हैं, यह एक हकीकत है कि जब भी किसी चीज़ की अहमियत ख़तम करने की कोशिश की जाती है तो पहले उसके बारे में गलत फहमी फैलाई जाती है, उसकी अहमियत को खतम करने का प्रयास किया जाता है, यही तरीका उर्दू जुबान के बारे में भी अपनाया गया है जबकि उर्दू जुबान ने समाज में फैली बुराइयों को दूर करने से लेकर स्वतंत्रता संग्राम और देश को आज़ादी दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है जिससे इन्कार संभव नहीं है और यह आज़ादी की तारीख का इतना उज्जवल अध्याय है जिसको महज़ भ्रमित करके और गलत फहमी से झुठलाया नहीं जा सकता है।

देश के प्रथम शिक्षा मंत्री स्वतंत्रा सेनानी, लेखक और बुद्धिजीवी मौलाना आज़ाद के संपादन में प्रकाशित होने वाली दो पत्रिकाएँ अलहिलाल और अल्बलाग़ और मौलाना जफर अली खान के संपादन में प्रकाशित होने वाली पत्रिका जमीनदार और इस सरीखे पत्रिकाएं और समाचार पत्र एक ऐसी सच्चाई हैं जो इतिहास के पन्नों में पत्थर की लकीर की तरह मौजूद हैं। अंग्रेज़ों के खिलाफ आज़ादी के लिये जागरूकता पैदा करने में उर्दू समाचार पत्रों और पत्रिकाओं ने जो महत्वपूर्ण रोल निभाया है वह उर्दू भाषा का बहुत बड़ा कारनामा है।

इन्केलाब जिन्दा बाद का नारा उर्दू भाषा का दिया हुआ नारा है, हिन्दुस्तान का कौन सा एलाक़ा ऐसा है जो इस नारे से परिचित नहीं है। कहने का मकसद यह है कि जिस भाषा ने समाज सुधार और देश को आज़ादी दिलाने में इतना नाकाबिले फरामोश रोल निभाया है आज इसी जुबान के साथ सौतेला व्यवहार किया जा रहा है और इस भाषा को एक समुदाय से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है जबकि यह एक कड़वी सचई है कि भाषा किसी एक गुट, समुदाय की भाषा नहींहोती है, और न ही भाषा की कोई सीमा होती है।

हर जुबान का सम्मान होना चाहिए, उसको फलने फूलने का अवसर मिलना चाहिए, भाषा को महज़ धर्म और समुदाय से जोड़ना न्याययोचित नहीं है, जो लोग जुबान को किसी समुदाय से जोड़ने का प्रयास कर रहे हैं वह इतिहास की हक़ीक़तों का इन्कार करने के साथ साथ भाषा के साथ घोर अन्याय भी कर रहे हैं। उर्दू जुबान में इतिहास का बहुत बड़ सरमाया मौजूद है, दूसरे धर्मों की किताबों के अनुवाद और उसकी सभ्यता का इतिहास है, यह संयुक्त विरासत है हमें इस विरासत को संजो कर रखना चाहिए

ताकि आने वाली नस्ल हमारे पूर्ण इतिहास से अवगत हो सके।

हमें उर्दू भाषा पढ़ने के साथ भारत की उन तमाम भाषाओं को पढ़ने और सीखने की ज़रूरत है जिनसे रोजमर्रा के काम काज जुड़े हैं खास तौर से हिन्दी अंग्रेज़ी वगैरह को अच्छी तरह पढ़ना और सीखना चाहिए ताकि व्यवहारिक जीवन में दिक्कत का सामना न करना पड़े।

स्कूल और कालजों के सिलेबस (पाठयक्रम) में कई भाषाओं को सबजेक्ट की हैसियत से पढ़ाया जाता है। उसको महज़ सब्जेक्ट या पास होने ही के लिये न पढ़ें बल्कि उस जुबान में कुशलता और कमाण्ड हासिल करने का भरपूर प्रयास करें दुनिया की कोई भाषा सबके लिये लाभाकारी है, और यह गलतफहमी नहीं होनी चाहिए कि अमुक भाषा को जानकार कर क्या करेंगा। आज कल देखा जा रहा है कि बहुत से बच्चे महज़ पास होने के लिये भाषा को पढ़ते हैं हमें इस सोच से बाहर निकलने की ज़रूरत है और जिस भाषा का हमने चुनाव किया है उसमें भरपूर मेहनत करनी चाहिए ताकि शिक्षा का मकसद पूरा हो। किसी भी भाषा की उपयोगिता और अहमियत से इन्कार नहीं किया जा सकता। जितनी भाषा की जानकारी रहेगी उतना ही फायदा होगा। धीरे धीरे कई भाषाओं को सीखा जा सकता है इससे हमें एक दूसरे को सहीह तौर से समझने का मौक़ा मिलेगा और एक दूसरे के बीच में जो दूरी है गलत फहमी है उसको मिटाने और खतम करने में मदद मिलेगी। अपने आप को केवल एक भाषा तक सीमित करना अकलमन्दी नहीं है बल्कि सरासर नुक़सान है।

❑ ❑ ❑

पाठक गण ध्यान दें

१-जल्द से जल्द बकाया राशि भेज दें। २-अगर आपको हर महीने की 5 तारीख को पत्रिका न मिले तो इसके बारे में कार्यालय को सुचित करें। न मिलने की सूरत में दूसरी कापी भेजी जायेगी, लेकिन शिकायत करने से पहले अपने नजदीकी डाकखाने पर जानकारी हासिल कर लें। ३-नये खरीदारों से अनुरोध है कि अपने पते में फोन नम्बर अथवा मोबाइल नम्बर और पिन कोड भी लिखें। ४-पुराने खरीदारों से अपील की जाती है कि यदि उनका कोई फोन नम्बर या मोबाइल नम्बर हो तो पोस्ट कार्ड पर या फोन के जरिये अपने खरीदारी नम्बर का हवाला देकर अवश्य भेज दें ताकि जरूरत पड़ने पर उनसे सम्पर्क किय जा सके। 5- मनी आर्डर या हमारे प्रतिनिधियों के माध्यम से पत्रिका के सदस्य बनने वालों को यह सूचित किया जाता है कि रसीद कटवाने के बाद दूसरे महीने ही में पत्रिका भेजी जायेगी। ६- किसी भी तरह की शिकायत के लिये इस नम्बर पर संपर्क करें। ७. नए और पुराने सदस्यों से अुनरोध है कि नक़द पैसा कोरियर और जनरल डाक से न भेजें। इसलाहे समाज के बारे में किसी भी तरह की शिकायत के लिये 3 बजे से 5 बजे तक फून करें। 011-23273407

पैग़म्बर मुहम्मद स० के बारे में
आइशा रज़िअल्लाहो अन्हा का बयान

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद

१. जब भी रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वस्सलम को दो बातों में अधिकार दिया जाता तो आप (पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वस्सलम) उनमें से उस का चुनाव करते जो आसान और सहल होता, शर्त यह है कि इसमें पाप का कोई पहलू न होता। अगर पाप होता तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वस्सलम सबसे बढ़ कर इससे दूर रहते। (सहीह बुखारी)

२. अल्लाह के पैगम्बर ने अपनी ज़ात के लिये कभी किसी को सज़ा नहीं दी और न कभी बदला लिया हां अल्लाह के आदेशों के अल्लंघन करने वालों को आप अल्लाह के लिये सज़ा देते थे।

३. अच्छी आदत यह थी कि बुराई के बदले में बुराई से कभी काम नहीं लिया हमेशा नज़रअन्दाज़ करते और मआफ कर देते। (सहीह बुखारी) ४. पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वस्सलम को इस तरह कभी नहीं हंसते देखा कि आप का तालू नज़र आया हो केवल मुस्कुरा दिया करते थे। ५. हर लमहा दिल पर अल्लाह का भय और डर रहता था, बादल देखते या आंधी आती तो चेहरे पर दुख के लक्षण स्पष्ट हो जाते। मैंने (आइशा रजिअल्लाहो अन्हा) ने कहा ऐ अल्लाह के पैगम्बर लोग बादल देखते हैं तो इस उम्मीद पर खुश होते हैं कि बारिश होगी। आप के चेहरे से दुख स्पष्ट होता है। फरमाया आइशा कौन सी बात मुझे निडर कर सकती है कि इसमें अज़ाब नहीं होगा? एक कौम को आंधी से अज़ाब दिया गया, एक कौम ने अज़ाब देखा तो कहा यह बादल है। (सहीह बुखारी)

६. आपने नाम लेकर कभी किसी पर लानत नहीं की न कभी अपने किसी सेवक किसी गुलाम किसी औरत और किसी जानवर को अपने हाथ से मारा। (मुस्लिम, अबू दावूद) ७. आपने कभी किसी के अनुरोध को रदद नहीं किया मगर यह कि वह अनुचित था।

८. घर में आते तो मुस्कुराते हुए आते, बातें इस तरह ठेहर ठेहर कर करते कि कोई याद रखना चाहे तो याद रख ले। (बुखारी)

९. एक देहाती आया और बोला आप बच्चों को बोसा देते हैं हम तो बोसा नहीं देते हैं फरमाया अल्लाह ने तेरे दिल से रहम निकाल दिया इसमें मेरा क्या इख्तियार है। (बुखारी)

१०. असवद रज़िअल्लाहो ने आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो से पूछा कि अल्लाह के रसूल घर में क्या क्या करते थे फरमायाः घर वालों की ख़िदमत में रहते थे यानी उनके काम किया करते थे, नमाज़ का वक़्त आता तो नमाज़ के लिये चले जाते थे। ११. अगर किसी की कोई हरकत पसन्द न होती तो उसका नाम लेकर मना नहीं करते असल काम से मना फरमा देते।

१२. रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वस्सलम के घर वालों ने एक दिन में दो निवाले नहीं खाए मगर उन में से एक खुजूर का था (बुखारी) इसके साथ रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वस्सलम के सवेक अनस रजिअल्लाहो का यह बयान भी शामिल कर लिजिये कि मैंने दस साल आप की ख़िदमत में गुजारे। इस पूरी मुददत में आप मेरे बारे में नापसन्दीदगी का कोई वाक्य जुबान पर न लाए, न कभी यह फरमाया कि अमुक काम को किया? न कभी यह फरमाया अमुक काम क्यों नहीं किया। बुखारी,**(रसूले रहमत से साभार,पृष्ठ ६७४-६७५)**

मां बाप और स्टूडेन्ट्स की ज़िम्मेदारियाँ

डा० अबुल हयात अशरफ

स्टूडेन्ट के कलास वर्क और होमवर्क की कापियां, अध्यापकों और मां बाप के दर्मियान संपर्क का माध्यम हैं जिनसे स्टूडेन्ट की शैक्षणिक गतिविधियों का पता चलता है इसलिये मां बाप या गारजियन को चाहिए किः

१. अपने बच्चों और बच्चियों के होमवर्क रोज़ाना चेक कर लिया करें और इन कापियों के ज़रिये अध्यापकों के निर्देशों पर अमल किया करें। २. बच्चों के शिक्षा एवं प्रशिक्षण और वक़्त का पाबन्द होने के लिये अध्यापकों को अपना भरपूर सहयोग दें। ३. अगर क्षात्र के मानसिक उत्थान और तालीमी तरक्की संतुष्टजनक न हो तो स्कूल के प्रधानाचार्य या क्लास टीचर से संपर्क करें। ४. इस मकसद के लिये मां बाप कलास टीचर से मुलाकात के लिये हर महीने की आखिरी तारीख वृहस्पतिवार या शनिवार को तय कर लेना चाहिए।

५. समाजी फंकशन जैसे शादी विवाह, सैर सपाटे या रिश्तेदारों के यहां जाने से बच्चों को जहां तक तो सके रोकना चाहिए ताकि स्कूल की हाजिरी (अटेन्डेन्स) प्रभावित न हो। ६. क्लास रूम से गैर हाजिरी की सूरत में मां बाप या गारजियन की तरफ से स्कूल के हेडमास्टर के नाम लिखित सूचना आनी चाहिए। ७. किसी बीमारी या नागहानी सूरत में डाक्टरी रिपोर्ट या मां बाप की तरफ से लिखित पत्र आना चाहिए। ८. किसी स्टूडेन्ट या जमाअत या सामूहिक रूप से बच्चों की तरफ से, स्कूल के सामान और फर्नीचर को नुकसान पहुंचाने की सूरत में गारजियन या मा बां बाप मुआवज़ा देने के पाबन्द होंगे। ९. मां बाप (पैरेन्ट्स) को याद रखना चाहिए कि स्ट्राइक, आदेश का उल्लंघन, विद्यालय के नियम की खिलाफवर्जी एक नैतिक, ज्ञानात्मक, समाजी और कौमी अपराध है। विद्यालय का मैनेजमेन्ट या डिस्पीलिन कमेटी उनके बच्चों, बच्चियों के खिलाफ कार्रवाई करने में हक बजानिब होंगे। १०. मां बाप को चाहिए कि वक़्त पर विद्यालय की फीस अदा कर दिया करें।

स्टेडेन्ट्स की ज़िम्मेदारी

१. अपने कपड़े को साफ सुथरा रखें। २. विद्यालय के समय की पाबन्दी करें। ३. अपनी किताबें, कापियां, और दूसरे सामानों की स्वयं हिफाज़त करनी चाहिए। ४. विद्यालय, कालेज की बिलडिंग, दीवार, फर्नीचर, किताबें, बिजली के समान और दूसरे सामानों की हिफाज़त करनी चाहिए। ५. स्टूडेन्ट्स को स्कूल में और बाहर अपने अध्यापकों सहपाठियों, सीनियर साथियों मां बाप और बुजुर्गों का सम्मान करना चाहिए। ६. स्टूडेन्ट्स को अपनी बात चीत और मामलात में मीठे बोल वाला और सभ्य होना चाहिए। ७. विद्यालय के अन्दर और बाहर हर जगह स्कूल के नियम का पालन करना चाहिए। ८. रोज़ाना के क्लास वर्क और होम वर्क को पाबन्दी से पूरा करना चाहिए। ९. स्टूडेन्टस को क्लास में बहस और दूसरों की नक़ल करने से परहेज़ करना चाहिए। १०. अध्यापक की गैर मौजूदगी में कलास के अन्दर मानीटर का मश्वरा मानना चाहिए। १०. किसी की तहकीर (अपमान) नहीं करना चाहिए। १२. विद्यालयों के सामानों को नुकसान पहुंचाना, इस्ट्राइक करना और स्कूल के नियमों का उल्लघन करना अपराध है।

❑ ❑ ❑

दीने उख़ुव्वत व मुसावात

शमीम अहमद अंसार उमरी, मऊ

इस्लाम का पैग़ाम है पैग़ामे मुहब्बत
यह दीने मुसावात है यह दीने उख़ुव्वत
है सारे ज़माने के लिये बाइसे रहमत
यह दिल से मिटा देता है हर रंज व कुदूरत
इस दीन में नफरत, न तअस्सुब न सितम है
इस दीन में मौला का बड़ा लुतफो करम है

हर शय की हक़ीकत यह बता देता है हम को
सामने बसीरत यह अता करता है हम को
यह राहे हिदायत पर लगा देता है हम को
यह रब्बे दो आलम से मिला देता है हमको
कश्ती को लगा देता है साहिल से हमारी
यह हम को मिला देता है मंज़िल से हमारी

यह हम को बचाता है हर इक फितना व शर से
दुनिया की तबाही से जहन्नम के शरर से
बे खौफ बनाता है बजुज एक के डर से
आज़ादी दिलाता है हर इक गैर के डर से
यह सजदा कराता है फक़त रब्बे उला से
यह हम को बनाता है वफदार ख़ुदा का

ख़ालिक़ ने बनाया है हमें अशरफ व अकरम
क्यों उसके सिवा और किसी दर पर झुकें हम
जो रब ने अता की है हमें शाने मुअज्ज़म
इस शान के शायान करें कोशिशे पैहम
पेशानी हमारी जो दरे रब पे झुकेगी
दया से हमारी सभी मख़्लूक़ जुड़ेगी

आदम ही की औलाद हैं अजमी हों कि अरबी
इन्सान सभी भाई हैं तुर्की हों कि हिन्दी
वह शैख़ हों सैयद हों मुगल हों कि हों खिलजी
क्यों कोई किसी पर करे इजहारे तअल्ली
इस दीन में हैं आदमी सब एक बराबर
जुर्रियते आदम हैं सभी भाई बरादर

इस्लाम में भूकों को खिलाना भी है नेकी
इस दीन में प्यासों को पिलाना भी है नेकी
एलाज मरीज़ों का कराना भी है नेकी
भटकों को सहीह राह दिखाना भी है नेकी
जिससे न मिले ख़ैर मुसलमान नहीं है
शर जिससे मिले साहिब ईमान नहीं है

मलऊन है इस दीन में जो शख्स है खुद सर
जो फितना व शर बुग्ज़ व अदावत का है पैकर
जो गीबत व बोहतान व तजस्सुस का खूगर
जो अपने पड़ोसी को सताता है सितमगर
इन्सान का हमदर्द जो इन्सान नहीं है
जालिम है मुनाफिक़ है मुसलमान नहीं है

जो प्यार से ग़ैरों को भी मानूस करे है
जो भाई की तकलीफ को महसूस करे है
खुद अपने कुसूरों पे जो अफसोस करे है
दीवारे तअल्ली को जमीं बोस करे है
जो साहिबे किरदार है महबूबे खुदा है
किरदार की अजमत पे हर इक शख़्स फिदा है

या रब तू हमें साहिब ईमान बना दे
किरदार का पाक़ीज़ा मुसलमान बना दे
आमाल में अखलाफ में कुरआन बना दे
जो सब का भला चाहे वह इन्सान बना दे
बन्दे हैं तेरे, तेरे वफादार रहें हम
इन्सान हैं इन्सां के मददगार रहें हम

(जरीदा तर्जुमान १६-३१ जुलाई २०१६)

नई नस्ल की इसलाह और अध्यापकों का दायित्व

लेख: रजब अबू बसीसा **अरबी से अनुवाद: अब्दुल मन्नान शिकरावी**

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः

''अल्लाह तआला तुम में से उन लोगों के जो ईमान लाए हैं और जो इल्म दिए गये हैं, दर्जे बुलन्द कर देगा और अल्लाह तआला (हर उस काम से) जो तुम कर रहे हो (खूब अर्थात अच्छी तरह) से खबरदार है''। (सुरे मुजादला आतय-११)

कुरआन में दूसरी जगह अल्लाह तआला ने फरमायाः

''अल्लाह तआला, फरिश्ते और अहले इल्म इस बात की गवाही देते हैं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और वह इन्साफ के साथ दुनिया को काइम रखने वाला है, इस गालिब और हिकमत वाले के सिवा कोइ इबादत के लायक़ नहीं''। (सूरे आले इमरान)

पैगम्बर मुहम्द सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

जिसने इल्म की तलाश के लिये कोई रासता तय किया तो अल्लाह तआला उसे जन्नत के रास्तों में से एक रास्ता तय कराए गा और बेशक फरिश्ते ज्ञान हासिल करने वालों की खुशनूदी के लिये अपने पर बिछा देते हैं और बेशक आलिम (ज्ञानी) के लिये जमीन व आसामन की पूरी सृष्टि मगफिरत की दुआ करती है यहां तक कि पानी की तह (गहराई में) मछलियां भी। बेशक आलिम की फजीलत एक उपासना करने वाले पर ऐसे ही है जैसे चौदहवीं के चांद की सितारों पर, यक़ीनन ओलमा नबियों (पैगम्बरों) के वारिस हैं जो दीनार दिरहम अर्थात धन दौलत के वारिस नहीं बनाए जाते बल्कि इल्म के वारिस बनाए जाते हैं जिसने जितना इल्म हासिल किया उसको इसका पूरा हिस्सा मिलेगा। (अबू दाऊद)

बयान किया जाता है कि एक मुसाफिर के रासते में जंगल पड़ता था जहां सन्नाटा और हवाओं की आवाज़ के अलावा कुछ नहीं था, अकाल इस जंगल की पहचान थी अर्थात इसमें जिन्दगी बसर करने के लिये कोई साधन नहीं था यात्री के सामान में कुछ बीज थे जिसको उसने अपने दाएं बाएं बो दिया और जो कुछ थोड़ा बहुत पानी था उससे बीज की सिंचाई कर दी। कुछ दिन महीने साल गुज़र गए। लम्बे सफर से लौटते हुए फिर इसी रास्ते से मुसाफिर का गुज़र हुआ क्या देखता है घने खूजूर के पेड़ों की लाइन हैं जिससे रास्ते की निशादेही हो रही है, उसके बीच फलदार पेड़ है। तरह तरह के फूल और ज़्यादा रोनक बढ़ा रहे हैं रास्ते के किनारे कई घर बने हुए हैं जहां पर लोगों की बड़ी तादाद का बसेरा है, बड़े काम कर रहे हैं बच्चे खेल रहे हैं, वह शख़्स पूछता है कि यह सब कहां से आ गया? मैं पिछली बार यहां से गुजरा था तो सन्नाटा था, इस जंगल में ज़िन्दगी कहां से आ गई? उसे बताया गया है कि मश्हूर है कि एक यात्री के सामान में मुट्ठी भर बीज थे जिसे उसने यहां दायें बाएं बो दिया था यह इसी का परिणाम है।

बीज जंगल में ही क्यों न बोए जाएं फल जरूर आते हैं थोड़ा वक़्त

ज़रूर लगता है शर्त यह है कि कोई बोने वाला और देख भाल करने वाला हो। इस वक़्त उम्मत दिशाहीन है वह गफलत और लापरवाही के जंगल में भट करही है और निजात का रास्ता ढूंढ रही है। तो क्या कोई है जो इसके लिये इस दर्दनाक और मायूस कुन परिस्थिति, चैलेन्जों और मुश्किलात से भरे वातावरण में निजात और कामयाबी के बीज बोए? वह प्रशिक्षण की जिम्मेदारी ले, खैर खुवाही का कर्तव्य निभाए और ऐसे प्रभाव छोड़े जैसे मुसाफिर ने छोड़े थे। हमारे अध्यापक गण नई नस्ल को शिक्षा और प्रशिक्षण के उस रास्ते पर ले जा सकते हैं जहां सिर्फ कामयाबी ही कामयाबी है।

माननीय अध्यापकगण इस पीढ़ी के लिये आशा की एक किरण हैं जो समस्याओं से दोचार है।

नई पीढ़ी ऐसे निस्वार्थ अध यापकों के इन्तेज़ार में है और ऐसे सहरो की ज़रूरत है जो हमारे लिये मार्ग प्रशस्त करे। हर सच्चे इन्सान का मिशन समाज को उन समस्याओं से निजात दिलाना है जो उसके रास्ते की रूकावट हैं और उन चैलेन्जों का सामना करना है जो सुधार की राह में रूकावट बने हुए हैं हमारे लिये ज़रूरी है कि हम एक स्थिर दृष्टिकोण अपनाएं और मिल कर गौर करें कि हमारा समाज किस तरफ जा रहा है? और हमारे नौजवान लड़कों और लड़कियों का विभिन्न समस्याओं से घिरे समाज में क्या अंजाम होगा। समाज में नैतिक पतन के तूफान को रोकने के लिये हम सब को मिल कर प्रयास करना अत्यंत आवश्यक है। नैतिक पतन को राकने के लिये हमारे माननीय अध्यापक गण भरपूर क्षमता रखते हैं। शताब्दियों से अध्यापकों का एक उच्च स्थान रहा है।

कौमों के पतन के कारणों पर गौर किया जाए तो मालूम होता है कि उनके पतन का कारण रहन सहन के संसाधन की किल्लत या आर्थिक कमजोरी के सबब नहीं हुआ बल्कि सुधारकों और रिफारमरों की किल्लत की वजह से हुआ ऐसे में कौम का आधार अध्यापकों और सुध ारकों पर ही होगा इस लिये इस सिलसिले में किसी प्रकार की कोताही नहीं होनी चाहिए। हज़रत अनस बिन मालिक रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लहा के पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक अल्लाह हर उस शख्स से पूछेगा जिसको संरक्षक (निगेहबान) बनाया गया होगा कि उसने इसकी सुरक्षा की या बर्बाद कर दिया। जिम्मेदारी की अदायगी में गंभीर कोताही यह है कि आप इसकी अदायगी गलत तरीके से करें। जब अध्यापक अपने मिशन को निभाने में नकारात्मक कार्यशैली अपनाएंगे तो किसी भी चीज़ में लापरवाही का गलबा हो गा फिर यही कार्य शैली स्टूडेन्ट्स में घर कर जाए गा। इस्लाम ने समाज को इस महत्वपूर्ण पहलू की तरफ भरपूर ध्यान दिया है। बुखारी में अब्दुल्लाह बिन उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हो का बयान है कि पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया तुम में हर एक निगेहबान (संरक्षक) है और उससे उसके अधीन (मातहतों) के बारे में पूछा जाएगा।

अच्छा अध्यापक वह है जो अपना आत्मनिरीक्षण करता है यह हमेशा स्वयं से पूछता है कि क्या मैंने चरित्र, मूल्य और समाज की व्यवस्था को मज़बूत करने में अपना मिशन पूरा किया था अपनी जिम्मेदारी को पूरी तरह से निभा दिया। निस्वार्थ अध्यापक वही है जिसे अपने मिशन व मकसद से दिलचस्पी हो और इसे अत्यन्त जिम्मेदारी से अदा करे माननीय अध्यापकों की मेहनत से ही अच्छा समाज वजूद में आता है

और अगर यह कहा जाए तो अतिश्योक्ति न होगी कि समाज के वजूद से पहले अध्यापक की ज़रूरत होती है क्योंकि अगर जिम्मेदारी निभाने वाला अध्यापक न मिले तो सब दिशाहीन हो जाएगा चाहे सूसाइटी आर्थिक और भौतिक रूप से कितनी ही मज़बूत क्यों न हो।

अध्यापक की नैतिकता, उनके शब्द और उनकी रूचियां नोट की जाती हैं और स्टूडेन्स उनको सम्मान की निगाह से देखते हैं। हज़रत उक़बा बिन अबू सुफयान ने अपने बेटे के अध्यापक को उपदेश देते हुए कहा था ध्यान रखना कि मेरे बेटे के सुधार से पहले स्वयं की इस्लाह (सुधार) कर लेना क्योंकि उनकी आखें तुम्हारे कर्म को देखती हैं, उनके नज़दीक अच्छा वह है जिसे आपने अच्छा समझा और उनके नज़दीक खराब वह है जिसे आपने खराब समझा।

अध्यापक रोल माडल हैं, वह अपने शिष्यों के साथ जैसा बर्ताव करेंगे वह इससे प्रभावित होंगे चाहे वह सज़ा ही का मामला क्यों न हो इसी लिये अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस पर सावधान किया। हज़रत अब्दुल्लाह बिन आमिर रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि एक दिन मेरी मां ने मुझे बुलाया और अल्लाह के पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि

अध्यापक की नैतिकता, उनके शब्द और उनकी रूचियां नोट की जाती हैं और स्टूडेन्स उनको सम्मान की निगाह से देखते हैं। हज़रत उक़बा बिन अबू सुफयान ने अपने बेटे के अध्यापक को उपदेश देते हुए कहा था ध्यान रखना कि मेरे बेटे के सुधार से पहले स्वयं की इस्लाह (सुधार) कर लेना क्योंकि उनकी आखें तुम्हारे कर्म को देखती हैं, उनके नज़दीक अच्छा वह है जिसे आपने अच्छा समझा और उनके नज़दीक खराब वह है जिसे आपने खराब समझा।

वसल्लम उस वक़्त वहीं मौजूद थे मेरी मां ने कहा कि आओ मैं तुम्हें एक चीज़ देती हूं तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा तुम अपने बच्चे को क्या देना चाहती हो? जवाब दिया कि खुजूर। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया अगर तुम अपने इस बच्चे को कुछ नहीं दो गी तो तुम्हारे कर्म पत्र में झूठ लिखा जाएगा।

इन्सान के सामने जो कुछ भी बोला जाता है उसके अन्दर इसे याद रखने की क्षमता होती है लेकिन कम आयु बच्चे सुनी हुई बातों से ज़्यादा देखी हुई चीज़ों से प्रभावित होते हैं इसी तरह से स्टूडेन्ट्स अपने अध्यापकों के कर्म से प्रभावित होते हैं इसलिये अध्यापकों की कोशिश होनी चाहिए कि आप उनकी आस्था, और मामलात को दुरूस्त करें और चरित्रवान बनाने पर जोर दें उन्हें ऐसी ट्रेनिंग दें जिससे उनकी वैचारिक क्षमताओं में बढ़ोतरी हो, बुद्धि में बढ़ोतरी हो, अगर इस तरीके पर औलाद की ट्रेनिंग होगी तो हर पीढ़ी और समाज स्वयं दुरूस्त हो जाएगा।

अध्यापक अपने समाज के तईं अपना प्रशिक्षणिक रोल पूरी तरह अदा करें क्योंकि समाज आप से दुरूस्त रहेगा और राष्ट्र एवं समुदाय की सेवा के लिये नौजवान नस्ल ट्रेनिंग में आप की सहायता लेता रहेगा।

❑ ❑ ❑

तंबाकू और हाई बलड प्रेशर

डा० एम.एन बेग

तम्बाकू नोशी सिगार, सिगरेट, बीड़ी, चिलम, हुक्का और पाइप के द्वारा होती है। हमारे देश में सिगरेट, बीड़ी चिलम ज़्याद आम हैं, चिलम का रिवाज देहात में शताब्दियों से फल फूल रहा है।

एक सावधान अन्दाजे के अनुसार हाई बलड प्रेशर के मरीज़ भी तम्बाकू नोशी से खास तौर से परहेज़ नहीं करते, इनमें तम्बाकू नोशी का अनुपात तीन में का एक है अर्थात हाई बलड प्रेशर के हर तीन मरीज़ों में से एक मरीज़ ज़रूर तम्मबाकू नोश है और इसके लिये हार्ट अटैक का खतरा तम्बाकू नोशी न करने वाले मरीज़ों के मुक़ाबले में तीन से पांच गुना ज़्यादा होता है। और आम तौर पर घातक होता है।

तम्बाकू में निकोटीन प्रयाप्त मात्रा में मौजूद होती है और यही निकोटीन बलड प्रेशर को बढ़ाने का कारण बनती है।

सिगरेट, बीड़ी, चिलम वगैरह का पहला कश लेते ही तम्बाकू का धुवां फेकड़ों में पहुंचता है। केवल दो सिगरेट पीने से ही बलड प्रेशर दस मिली मीटर बढ़ जाता है, यह बढ़ोतरी३० मिनट तक ही रहती है जिस के बाद बलड प्रेशर अपनी असली हालत पर आ जाता है लेकिन अगर थोड़े थोड़े अन्तराल पर तम्बाकू नोशी का सिलसिला जारी रहे तो यह बढ़ोतरी बाकी रहती है। बलड प्रेशर में बढ़ोतरी के अलावा भी तम्बाकू नोशी से दूसरे नुकसानात भी होते हैं। तम्बाकू में पाये जाने वाले दूसरे रासायनिक अंश खून की रगों की अुदरूनी परत को डिस्बैलेन्स और खुरदरी बना देते हैं जिसके कारण कोलिस्ट्रोल के थिक्कों का इन रगों में कहीं कहीं जमाव भी हो सकता है और इस तरह रगों का जौफ (पेट अर्थात अनुरूनी भाग) तंग होने के कारण खून का आजादाना सरकूलेशन (गर्दिश, बहाव) में रूकावट पैदा हो जाती है। इसके अलाता तम्बाकू नोशी से ही शरीर में ऐसे हारमून्स में बढ़ोतरी हो जाता है जिसके कारण शरीर में पानी ज़्यादा जमा होने लगता है और इन दो कारणों से बलड प्रेशर में बढ़ोतरी होती है।

तम्बाकू छोड़ने से अगर्चे बलड प्रेशर कुछ पुवाइन्ट ही कम हो सकता है लेकिन इन कारणों से तम्बाकू नोशी छोड़ना बहुत ही ज़रूरी है।

१. तम्बाकू नोशी के हानिकारक प्रभाव को दूर करने के लिये जो दवाएं सेवन की जाती हैं वह उसी वक़्त प्रभावी साबित हो सकती हैं जब तम्बाकू नोशी को छोड़ दिया जाए वर्ना गैर प्रभावी साबित होती हैं।

२. तम्बाकू नोशी छोड़ देने से हार्ट अटैक, हार्ट फेलेवर और फालिज के हमले की संभावनाएं कम हो जाती हैं।

३. तम्बाकू छोड़ने का एक तरीक़ा यह है कि चियोंगम चबाया जाए और उस वक़्त तक चबाया जाए जब तक कि इच्छा के लक्षण खतम न हों जाएं।

तम्बाकू छोड़ने की एक तारीख़ तय कर ली जाए और इस तारीख पर तम्बाकू नोशी को हमेशा के लिये छोड़ दिया जाए।

अपने फेमिली डाक्टर से मश्वरा करना भी ज़रूरी है।

❑ ❑ ❑

(प्रेस रिलीज़)

नागपुर की प्रसिद्ध समाजी एवं तालीमी शख्सियत मुहम्मद यूनुस अंसारी का निधन

दिल्ली १६ जुलाई २०१६

मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने नागपुर के कवि एवं साहित्यकार, मज्लिस मदर्सा इस्लामिया नागपुर के संस्थापक, सचिव और किदवाई एजूकेश्नल एण्ड कल्चरल सूसाइटी नागपुर के अध्यक्ष और मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के कोषाध्यक्ष अल हाज वकील परवेज़ के बड़े बरादर निस्बती और समधी और बहुत से मिल्ली, तालीमी और समाजी खिदमात में शरीक जनाब हाफिज़ मुहम्मद यूनुस अंसारी साहब के निधन पर गहरे रंज व ग़म का इज़हार किया है और उनकी मौत को बड़ा इलमी तालीमी समाजी और कौमी व मिल्ली ख़ासारा क़रार दिया है। उन्होंने कहा कि जनाब मुहम्मद हाफिज़ यूनुस अंसारी साहब एक तालीम और समाजी शख्सीयत और स्थानीय स्तर पर काफी सियासी प्रभाव रखते थे विभिन्न तालीम संस्थाओं से जुड़े रहे आप मज्लिस मदर्सा इस्लामिया नागपुर और इसके तहत स्थापित इस्लामिया उर्दू प्राइमरी स्कूल, इसलामिया उर्दू हाई स्कूल और इस्लामिया जूनियर कालेज आफ साइंस के संस्थापक सचिव और क़िदवई एडूकेश्नल एण्ड कलचरल सूसाइटी और इसके संरक्षण में चल रही तालीमी व तरबियती संस्थाओं किदवई प्राईमरी स्कूल, किदवई हाई स्कूल और किदवई जूनियर कालेज आफ आर्टस एण्ड साइंस के अध्यक्ष थे। आप ने पूरी जिन्दगी को तालीम की रोशनी फैलाने और समाजी सेवाओं के लिये समर्पित कर रखी थी। इसके अलावा वह उर्दू और फारसी भाषाओं में कविताएं लिखते थे उर्दू फारसी का कविता संग्रह भी प्रकाशित हो चुका है। मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द के जिम्मेदारान से बड़ी मुहब्बत करते थे और जमीअत के कामों से दिली लगाव रखते थे, कल इशा की नमाज़ के बाद पैत्रिक भूमि नागपुर में ८५ साल की आयु में निधन हो गया और आज जुहर की नमाज़ के बाद तदफीन अमल में आई। चूंकि हाफिज युनूस अंसारी साहब मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के कोषाध्यक्ष अलहाज वकील परवेज के पुराने साथी और दोनों खानदान के सरपरस्त थे और तमाम तालीमी संस्थाओं की स्थापना और निर्माण एवं विकास में पूर्ण रूप से शामिल रहते थे और दोनों के स्वभाव में अनुकूलता होने के सबब यह कारवां प्रगति पर था इसलिये इससे अलहाज वकील परवेज, उनकी बीवी और उनके खानदान को बड़ा सदमा पहुंचा है। पसमांदगान में चार बेटे और कई पोते और पोतियां हैं। अल्लाह मरहूम की मग्फ़िरत फरमाए, सेवाओं को कुबूल फरमाए, जन्नतुल फिरदौस में जगह दे पसमांदगान खास तौर से अल्हाज वकील परवेज और उनकी बीवी को सब्र व संयम दे।

प्रेस रिलीज के अनुसार मर्कज़ी जमीअत अहले हदस हिन्द के महा सचिव मौलाना मुहम्मद हारून सनाबिली और अन्य पदधारियों और कार्य कर्ताओं ने मुहम्मद हाफिज़ यूनुस अंसारी साहब के निधन पर हार्दिक शौक पेश किया है और उनके बुलन्द दर्जात के लिये दुआ की है।

इस्लाम और मज़दूर

मौलाना अब्दुर्रहमान इसलाही

अल्लाह ने दुनिया की व्यवस्था इस तरह बनाई है कि इन्सान बग़ैर मेहनत के अपनी ज़िन्दगी की ज़रूरतों को पूरी नहीं कर सकता। रोजगार इन्सान इस लिये तलाश करता है कि उसे आमदनी हासिल हो और सुख चैन की जिन्दगी बसर कर सके। उचित खाना मिले, रहने के लिये मकान और पहनने के लिये ऐसा कपड़ा मिले जो शरीर को ढांप और सर्दी व बूप से बचा सके। चूंकि दुनिया में जीवन बसर करने के लिये एक दूसरे के मोहताज हैं इसलिये अल्लाह तआला ने हर शख्स के लिये कोई न कोई काम का पेशा बना दिया ताकि इसके द्वारा रोज़ी हासिल करे अगर अल्लाह ने रोज़गार की यह व्यवस्था न बनाई होती तो दुनिया में यह आर्थिक प्रयास और भागदौड़ न होती।

समाज के हर व्यकित पर अनिवार्य है कि वह मेहनत करे ताकि बेरोज़गारी न फैले और यह कोई अपमान की बात नहीं बल्कि मेहनत करना और हलाल रोज़ी कमाना हर शख्स के लिये इबादत का दर्जा रखता है इसलिये इस्लाम हमें कदम कदम पर आर्थिक प्रयास करने की प्रेरणा देता है।

इसी लिये इस्लाम जहां रोज़गार कमाने पर ज़ोर देता है वहीं यह भी बताता है कि हलाल रोज़ी कमाओ क्योंकि हलाल रोज़ी से न सिर्फ ज़िन्दगी की आवश्यकताएं पूरी होंगी बल्कि यह इबादत और अल्लाह के आदेशों के अनुसार होगा। अल्लाह तआला ने पैगम्बरों के माध्यम से हर व्यक्ति को यह निर्देश दिया।

ऐ पैग़म्बर! पवित्र चीज़ों में से खाओ और नेक अमल करो, (सूरे मोमिनून) रोज़ी हासिल करने के लिये मेहनत व मज़दूरी करनेवाले को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह हलाल रोज़ी कमाए और रोज़गार कमाने में नेक अमल की पाबन्दी करे इसी लिये कुरआन ने अधिकतर जगहों पर हलाल रोज़ी कमाने पर ज़ोर दिया है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः

''ऐ लोगों जो कुछ ज़मीन में है उससे पवित्र चीज़ें खाओ, और शैतान के क़दमों (पदचिन्हों) की पैरवी न करो वह निसन्देह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है''। (सूरा बकरा)

हदीसों से मालूम होता है कि मज़दूर को काम में हमेशा खैर खुवाही और भलाई को मददे नज़र रखनी चाहिए इसी लिये पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वस्ललम ने फरमायाः बेहतरीन कमाई मज़दूर की कमाई है जबकि वह भलाई के साथ हो। एक मजदूर के लिये यह भी ज़रूरी है कि वह जो काम भी करे अच्छे ढंग से करने का प्रयास करे इससे मजदूर की नेकनामी होती है और स्वामी की निगाह में मजदूर का सम्मान बढ़ जाता है।

जुबैर बिन औवाम रज़िअल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वस्ललम लोगों को मांगने से रोकते थे। (बुखारी)

इस लेख का सारांश यह है कि इस्लाम ने मेहनत करके रोज़ी कमाने की सराहना और प्रशंसा की है इसी तरह हलाल कमाई पर बहुत जोर दिया है और हराम कमाई से दूर रहने का आदेश दिया है। इस्लाम का मानना है कि मेहनत करके खाना एक इन्सान के लिये सौभाग्य की बात है न कि अपमान की। इस लिये हम सभी लोगों को मजदूरी तिजारत में हलाल रोज़ी कमाने में इस्लामी सिद्धांतों का पालन करना चाहिए और हराम माल की कमाई के तमाम तरीकों और रास्तों से बचना चाहिए।

पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया

अबू हुरैरा रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः भला बताओ अगर तुम में से किसी के दरवाज़े पर एक नहर हो और वह उसमें रोज़ाना पांच बार नहाता हो तो क्या उसके शरीर पर मैल बाक़ी रहेगा? लोगों ने कहाः उसके शरीर पर थोड़ी सी भी मैल बाकी नहीं रहे गी। यही मिसाल पांचों नमाज़ों की है। अल्लाह तआला इन नमाज़ों के बदले गुनाहों को मिटा देता है। (बुखारी ५२८, मुस्लिम ६६७, शब्द मुस्लिम के हैं)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः दो कलिमे जुबान पर हलके हैं, तराजू में वज़नी हैं, रहमान के नज़दीक प्रिय हैं। सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही, सुबहानल्लाहिल अज़ीम (बुखारी-मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि एक आदमी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और कहा ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे अच्छे व्यवहार का सबसे ज़्यादा हकदार (पात्र) कौन है? आप ने फरमायाः तुम्हारी मां, पूछा फिर कौन? फरमायाः तुम्हारी मां, पूछा फिर कौन? फरमायाः तुम्हारी मां, पूछा फिर कौन? फरमायाः तुम्हारे बाप। (बुखारी-मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो जनाज़े में हाज़िर हुआ और नमाज़ पढ़ी तो उसके लिये एक क़ीरात है, और जो जनाज़े में दफन किये जाने तक हाज़िर रहा उसके लिये दो क़ीरात है। आपसे पूछा गया कि यह दो क़ीरात क्या हैं? आपने फरमाया दो बड़े पहाड़ी के समान। (बुखारी-मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने किसी खाने पर कभी ऐब नहीं लगाया अगर खाना चाहते तो खा लेते और अगर पसन्द नहीं करते तो नहीं खाते थे। (बुखारी-मुस्लिम)

आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं आपने फरमायाः मुर्दों को बुरा भला न कहो क्योंकि मुर्दों ने जो कुछ किया था उसका बदला उन्हें मिल चुका। (बुखारी-५४)

आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्ललल्लहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जुहर की नमाज़ से पहले चार रकअत

नहीं छोड़ते थे और दो रकअत फज्र से पहले। (बुखारी)

अनस रज़िअल्लाहो तआला अन्हो नबी से बयान करते हैं आप ने फरमायाः बेशक सब्र पहले दुख के वक्त है। (बुखारी, मुस्लिम)

अनस रज़िअल्लाहो तआला अन्हो नबी सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः तीन चीज़ें मय्यत के साथ जाती हैं और दो चीज़ें लौट आती हैं और एक चीज़ बाकी रह जाती है उसके परिवार वाले उसका माल और उसका अमल उसके साथ जाता है लेकिन उसके परिवार उसका माल लौट आता है और उसका अमल बाकी रह जाता है। (बुखारी-मुस्लिम)

अनस रज़िअल्लाहो तआला अन्हो नबी सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः आसानी पैदा करो और मुश्किल न पैदा करो, खुशखबरी सुनाओ और घृणा की बातें न करो। (बुखारी, मुस्लिम)

अनस रज़िअल्लाहो तआला अन्हो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आपने फरमायाः अपनी सफों को बराबर करो, बेशक सफों को बराबर करना नमाज़ की दुरूस्तगी में से है। (बुखारी, मुस्लिम)

इब्ने उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः रात में अपनी नमाज़ के आखिर में वित्र पढ़ो। (बुखारी-मुस्लिम)

इब्ने उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः लोगों से भीक मांगने वाला आदमी क्यामत के दिन इस हाल में आये गा कि उसके चेहरे पर गोश्त नहीं होगा। (बुखारी, मुस्लिम)

इब्ने उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसकी अस्र की नमाज़ छूट गयी तो गोया कि वह अपने माल और आल औलाद से काट दिया गया। (बुखारी-मुस्लिम)

सालिम अपने बाप रजिअल्लाहो अन्हुमा से रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः हसद केवल दो चीज़ों में है एक आदमी वह है जिसको अल्लाह ने कुरआन दिया तो वह उसकी रात और दिन में तिलावत करता है और एक आदमी वह है जिस को अल्लाह ने माल दिया तो वह उस माल को रात और दिन में खर्च करता है। (बुखारी, मुस्लिम)

जाबिर रजिअल्लाहो तआला अन्हो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः बायें से न खाओ क्योंकि बायें से शैतान खाता है। (मुस्लिम)

जाबिर रजिअल्लाहो तआला अन्हो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः जो अल्लाह से मुलाकात करेगा और उसके साथ किसी को साझीदार नहीं बनाया होगा तो वह जन्नत में दाखिल होगा और जो अल्लाह से मुलाकात करे गा और उसने उसके साथ किसी को साझीदार बनाया होगा तो जहन्नम में दाखिल होगा।

(मुस्लिम)

इब्ने मसऊद रजिअल्लाहो तआला अन्हो रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आप ने फरमायाः क्यामत के दिन अल्लाह के यहां सबसे ज्यादा सख्त अज़ाब तसवीर बनाने वाले को दिया जायेगा। (बुखारी, मुस्लिम)

इब्ने मसऊद रजिअल्लाहो तआला अन्हो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः जिस ने रात में सूरे बक़रा की आखिरी दो आयतें पढ़ीं यह उसके लिये काफी हो जायें गी। (बुखारी)

साबित बिन जह्हाक रजिअल्लाहो तआला अन्हो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आप ने फरमायाः मोमिन पर लानत करना उसके कत्ल के समान है। (बुखारी, मुस्लिम)

अबू ज़र रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः छोटी सी भलाई को हक़ीर (मामूली) न समझो और अगर अपने भाई से मिलो तो उससे हंसते हुये मिलो। (मुस्लिम)

अबू कतादा रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब तुम में से कोई मस्जिद में दाखिल हो तो बैठने से पहले दो रकअत नमाज़ पढ़े। (बुखारी, मुस्लिम)

अबू मूसा रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो अपने रब को याद करता है और जो नहीं याद करता है उनकी मिसाल जिन्दे और मुर्दे की तरह है। (बुखारी)

इब्ने अब्बास रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः दो नेअमतों के बारे में अधिकतर लोग धोके में रहते हैं तनदुरूस्ती और खाली वक्त (बुखारी)

उस्मान बिन अफ्फान रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम में सब से बेहतर वह है जो कुरआन सीखे और उसको सिखाये। (बुखारी, मुस्लिम)

उस्मान बिन अफ्फान रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने अच्छी तरह वजू किया तो उसके शरीर से गलतियां निकल जाती हैं यहां तक कि उसके नाखुन से भी निकल जाती हैं। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआला तुम में से किसी ऐसे शख्स की नमाज़ कुबूल नहीं करता जिसे वुजू की ज़रूरत हो यहां तक कि वह वुजू कर ले। (बुखारी,६९५४, मुस्लिम २२५)

अबू हुरैरा रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः माल व इज्ज़त मालदारी नहीं है असल माल दारी नफ्स की मालदारी है। (बुखारी ६४४६ मुस्लिम १०५१)

दानवीरता

मुहम्मद अज़हर मदनी

हज़रत अबू हुरैह रजिअल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला ने मुझसे फरमाया कि तुम लोगों पर खर्च करो मैं तुम पर ख़र्च करूंगा और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह का दायां हाथ भरा हुआ है, दिन रात खर्च करने से कम नहीं होता है, तुम थोड़ा गौर व फिक्र करो कि जब से अल्लाह ने ज़मीन आसमान को पैदा किया है उस समय से क्या कुछ खर्च किया है, थोड़ी सी भी कमी नहीं आयी जो उसके दायें हाथ में है और फरमाया कि अर्श पानी पर है और उसके दूसरे हाथ में मौत है और वह जिसको चाहता है सरबुलन्दी देता है और जिसको चाहता है पस्ती में ढ़केल देता है। (मुस्लिम)

अहले सुन्नत वल जमाअत का यह अकीदा है कि अल्लाह तआला अपने बन्दों पर मामूली भी सख़्ती नहीं करता है बल्कि अपनी रहमतों का दरवाज़ा हमेशा खुला रखता है बेहिसाब देता है और उससे मांगने वालों को बेहिसाब देता है। यही वजह है कि अल्लाह अपने बन्दों को ज़्यादा से ज्यादा सखावत (दानवीरता) का हुक्म देता है फालूत जगहों पर खर्च से मना करता है। हदीस में आता है कि कोई भी इन्सान ऐसा नहीं है जो दुनिया में आये और अपना हक लिये बिना चला जाये। अल्लाह तआला पैदा करने वाला और रोज़ी देने वाला है और सबकी आवश्यकताओं को पूरी करता है। वह जानदार को पैदा करने से पहले उसकी किसमत का फैसला कर देता है और फरमाता है ''मैं न उनसे रोज़ी चाहता हूं न मेरी) यह चाहत है कि यह मुझे खिलाये। अल्लाह तआला तो खुद ही सब को रोज़ी देने वाला है'' (सूरे जारियात)

इसलिये अल्लाह की राह में सखावत और खर्च करना चाहिये, अपने घर वालों, बाल बच्चों, रिश्तेदारों, गरीबों, ज़रूरतमन्दों पर ख़र्च करना चाहिये।

जो तिना ख़र्च करता है अल्लाह उसको उतना ही ज़्यादा अपनी नेमत देता है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः सबसे मालदार शख़्स वह है जो अल्लाह के फ़ैसले पर खुश हो, अल्लाह ने जो दिया है उसको अपनी तक़दीर मानता है, इस पर खुशी व्यक्त करता है। एक हदीस में आता है कि ऐ आदम की औलाद ख़र्च करो ताकि मैं तुम पर ख़र्च करूं।

इस हदीस से पता चलता है कि ख़र्च और दानवीरता से माल में कमी नहीं होती है बल्कि बर्कत होती है।

सदका खैरात करने, रिश्ता नाता जोड़ने गरीबों की देख भाल करने से अल्लाह तआला माल व दौलत में बर्कत देता है।

❑ ❑ ❑

पानी की बर्बादी का असल कारण
पानी के मुफ्त होने की सोच

असुअद आज़मी, वाराणसी

पानी और ज़िन्दगी प्रतिपूरक हैं, जल है तो जीवन है वर्ना पानी के बगैर जिन्दगी की कल्पना नहीं की जा सकती। आज नारा लगाया जाता है ''जल ही जीवन है'' कुरआन की कई आयतों में बताया गया है कि अल्लाह ने हर जीवित वस्तु को पानी से ही बनाया और पैदा किया है। जीवित वस्तु से तात्पर्य इन्सान ही नहीं या इन्सान के साथ हैवान और चरिन्द परिन्द ही नहीं, बल्कि पेड़ पौदे, घास फूस यह भी जिन्दा और मुर्दा होते हैं इनके जीवन का आधार भी पानी पर ही है। जिन्दगी के लिये जब पानी इतना ज़रूरी ठेहरा तो अल्लाह ने इस संसार में पानी की काफी बहुतात रखी। संसार का मैप देखें दो तिहाई हिस्सा पानी का है और एक तिहाई हिस्सा खुश्की का जो आबादी के लायक़ है। पहाड़ों की चोटियों पर जमे बर्फ की शक्ल में भी करोड़ों अरबों टन पानी पैक करके रख दिया गया है।

आज का इन्सान जब किसी मेहनत के बगैर महज़ एक बटन दबाकर जमीन के सीने से हज़ारों लीटर पानी मिन्टों में निकालने लगा तो धीरे धीरे उसके जेहन व दिमाग़ से इसकी अहमियत ख़तम होने लगी। माले मुफत दिले बेरहम की कहावत शत प्रतिशत चरितार्थ होने लगी। पहले कुवों और हैण्ड पाइप से पानी भर कर इस्तेमाल होता था तो कम से कम इस मेहनत की वजह से ही इसे पानी की अहमियत का कुछ अन्दाज़ा होता था मगर अब टोटी या शावर के नीचे बैठ कर देर तक स्नान करता है, पहले पन्दरह बीस लीटर पानी उसके स्नान के लिये काफी होता था तो अब साठ लीटर से सत्तर लीटर से कम शायद ही खर्च करता हो, यही हाल बर्तन धुलने, कपड़े धुलने और दूसरे इस्मोल का है।

अधिकांश सरकारें भी अपनी जनता को पानी मुफ्त में उपलब्ध कराती हैं, कुछ सरकारी, अर्ध सरकारी, कल्याणकारी एवं समाजी संगठन भी सेवा भाव से लोगों तक फ्री (मुफ्त) पानी पहुंचाने का काम करते हैं। इन सब और अन्य कारणों से हर छोटे बड़े मर्द औरत, अमीर गरीब सब के जेहन में पानी के फ्री होने की सोच या कल्पना इतनी बैठ गयी है कि इसे मनों टनों बर्बाद करते या बर्बाद होते देख कर भी उनके माथे पर बल (शिकन) तक नहीं आती। इस वक़्त जब कि हर तरफ पानी के लिये कोहराम मचा है देश के अधिकतर एलाके बूंद बूंद को तरस रहे हैं, कई कई दिनों के बाद महल्लों में पानी के टेन्कर पहुंचते हैं तो पानी प्राप्त करने के लिये होड़ लग जाती है। कहीं कहीं पुलिस की सहायता से पानी तकसीम किया जाता है मगर फिर भी आज जिन लोगों को बगैर मशक्कत के पानी मिल जा रहा है उनके यहां पानी के इस्तेमाल के बारे में कोई परिवर्तन नहीं आता है। छोटी छोटी फेमिलियों में हर दिन हज़ार लीटर तक पानी बहा दिया जाता है। इस महान नेमत का एहसास उसी वक़्त होता है जब यह नेमत छिन जाती है या भारी भरकम रक़म देकर इसे प्राप्त किया जाए।

ग़ौर करें अगर पानी कुछ घन्टों

के लिये बन्द हो जाता है तो हमारे पास बर्तनों में जो बचा खुचा पानी होता है उसे हम कितना सावधानी से खर्च करते हैं। सफर वग़ैरह में पन्दरह बीस रूपये की बोतल खरीदते हैं तो इसके एक एक कतरे बूंद को कितना महत्व देते हैं। क्या इस पानी से कोई हाथ मुंह पैर धुलता नज़र आता है? लेकिन रेलवे स्टेशनों पर पीने के पानी का जो सिस्टम होता है उससे जी भर कर पानी बहाया जाता है, पीने के लिये बोतल में भर कर लाया जाता है फिर अवसर मिलते ही इस पीने वाले पानी ही से हाथ मुंह पैर सब कुछ जम कर धुलना शुरू कर दिया जाता है और अवसर मिले तो इससे नहाने में भी संकोच न हो क्योंकि यह पानी मुफ्त है।

खलीफा हारून रशीद के बारे में आता है कि एक बार उन्होनें प्यास बुझाने के लिये पानी का प्याला मंगवाया। सभा में मौजूद एक आलिम ने उनसे प्रश्न किया कि ऐ मुसलमानों के खलीफ बताइए कि अगर सख्त प्यास से दोचार हों और पानी न मिले तो क्या करेंगे? उन्होंने तुरन्त जवबा दिया अपनी आधी हुकूमत उसके लिये लगा दूंगा। फिर प्रश्न किया कि अगर आप पानी पी लें और वह पेट में रूक जाए, पेशाब के रास्ते से निकल न पाए तो क्या करेंगे? उन्होंने जवाब दिया कि अपनी बाकी हुकूमत भी उसके लिये लगा दूंगा। सवाल करने वाले ने कहा ऐ अमीरूल मोमिनीन आप की पूरी हुकूमत एक प्याला पानी से ज्यादा कीमत नहीं रखती।

हमें याद आता है कि पढ़ाई के जमाने में मदीना यूनीवर्सिटी के हास्टलों में अधिकांश तौर से पानी आना बन्द हो जाता था और क्षात्रों को पानी के लिये इधर उधर भटकना पड़ता था। एक बार वाइस चान्सलर के साथ यूनीवसिर्टी के क्षात्रों का प्रोग्राम था सवाल जवाब का भी अन्तराल था किसी क्षात्र ने पानी की शिकायत की। सम्माननीय वाइस चान्सलर ने जवाब में बड़ी हकीमाना और अकलमन्दी की बात कही। उन्होंने कहा कि अगर स्टूडेन्ट्स उसी तरह पानी खर्च करें जिस तरह अपनी जेब से पैसे खर्च करते हैं तो यूनीवसिर्टी में कभी भी पानी की समस्या पैदा नहीं होगी। इस वाक्य की गहराई में जाकर गौर करें, अपना पैसा खर्च करने के बारे में इन्सान कितना सावधान होता है, कोई ज़रूरी सामान खरीदता है तो खूब मोल भाव करके सामान खरीदता है ताकि कम से कम पैसे में उसका काम चल जाए बिला वजह इधर उधर पैसे खर्च करना गवारा नहीं करता। पानी पैसे से कहीं ज़यादा अहम है। अगर इन्सान पानी को कम से कम वही अहमियत दे जो पैसे को देता है तो इसमें फालतू खर्च से बचने में मदद मिलेगी।

सरकारी संस्थाओं को भी चाहिए कि पानी के मुफ्त होने की सोच को खतम करें। यह फैसला यकीनन सख्त होगा मगर आने वाले पानी के संकट की शिददत को कम करने के लिये ज़रूरी है अधिकतर बड़े शहरों में इस पर अमल हो रहा है मगर इसे और ज्यादा बड़े पैमाने पर लागू करने की ज़रूरत है। अगर ट्रेफिक जाम और प्रदूषण से संरक्षण के लिये यह सख्त कदम उठाया जा सकता है कि पूरे शहर की आधी गाड़ियों को हर एक दिन के नाग़े से निकलने से रोक दिया जाए तो पानी का मामला तो इससे कहीं ज़्यादा अहम है इस लिये इस संबन्ध में सख्त से सख्त कदम साधारण असाधारण की भलाई के लिये होगा जिसे किसी तरह लोगों को कुबूल करना होगा।

❑ ❑ ❑

Posted On 21-22 Every Month
Posted At NDPSO
“Registered with the Registrar
of Newspapers for India”

AUGUST 2019
RNI - 53452/90
P.R.No.DL (DG-11)/8065/2017 - 2019

ISLAH-E-SAMAJ

4116, Urdu Bazar, Jama Masjid, Delhi-110006

अहले हदीस कम्पलैक्स और अहले हदीस मंज़िल के दोनों इतिहासिक और महान निमार्ण कार्यो के सिलसिले में एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमण्डल विभिन्न राज्यों के दौरे पर। इन्शाअल्लाह

जमाअती मित्रों और कौम व मिल्लत के शुभचिंतकों को मालूम है कि अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली और अहले हदीस मंज़िल जामा मस्जिद दिल्ली में दो भव्य तारीखी बिलडिंगों के निमार्ण का काम जारी है। इस सिलसिले में अल हम्दुलिल्लाह अहले हदीस कम्पलैक्स के महान निमार्ण प्रोजेक्ट की दूसरी मंज़िल की ढ़लाई का काम हुआ चाहता है और अहले हदीस मंज़िल में तरमीम और निमार्ण का काम तीसरी मंज़िल तक पहुंच चुका है जो अल्लाह के फज्ल व तौफीक के बाद मुहसिनीने जामअत व जमीअत की सखावत व दानवीरता की देन है। अधिकृत सहयोग के लिये अहबाबे जमाअत सूबाई जमीअतों से तनसीक़ के बाद मस्जिदों में बाजाबता और मुसलसल एलान फरमायें।

जल्द ही मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द का एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमण्डल आप की खिदमत में हाज़िर हो रहा है। इस महान और तारीखी खैर के काम में अपना भर पूर हिस्सा और रोल अदा करके पुण्य के पात्र बनें।

नोटः- इस सिलसिले में संबन्धित राज्यों के पदधारियों और जिम्मेदारान को सूचना दे दी गयी है।

A/c Name : Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind
A/c 629201058685 (ICICI Bank) Chandni Chowk, Delhi-6
(RTGS/NEFT/IFSC CODE ICICOO06292)